IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड प्रकोप एवं वृद्ध विवशता

रेणु
शोधार्थी
हिंदी - विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, भारत

सार-संक्षेप:

अधिकांश देशों में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्क को वृद्ध माना जाता है। उम्र बढ़ने के साथ ही उन्हें अनेकों शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक स्वास्थ्य एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही एक चुनौती का सामना कोविड-19 महामारी के दौरान करना पड़ा। कोविड-19 महामारी चीन के वुहान से शुरू हुई और जंगल की आग की तरह दुनिया में फ़ैल गयी, जिसके प्रसार को रोकने के लिए पूर्ण लॉकडाउन की नीति को अपनाया गया। परिणामस्वरूप दैनिक जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक,राजनीतिक,धार्मिक तथा आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तन हुआ। शारीरिक दूरी, आवागमन पर प्रतिबन्ध, होम कारंटाइन जैसे सामाजिक अलगाव वाले उपायों ने वृद्ध जनों को अधिक प्रभावित किया है। इस शोध -आलेख का उद्देश्य बुजुर्गों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कोविड-19 के प्रभाव तथा हिंदी कथा-साहित्य में वृद्धों के अकेलेपन-अलगाव एवं समाज द्वारा उनके प्रति दर्शाये गए जिस भाव का ज़िक्र है, उसे वर्तमान कोविड-19 सामाजिक परिवर्तन के कारण वृद्धों को हुई समस्यायों के साथ जोड़ते हुए उनकी अभिव्यक्ति इस अध्ययन का उद्देश्य है। साथ ही, 'चेतनालय' सेवा समिति द्वारा दिल्ली एवं उसके आस-पास के वृद्ध नागरिकों की मदद के लिए उठाये गए कदम का आंकलन करने का प्रयास भी है।

मुख्य शब्द :

कोविड-19 महामारी, भूमंडलीकरण, वृद्ध-जीवन, संघर्ष, चुनौती, अकेलापन, शारीरिक और मानसिक तनाव

बदलते दौर के कई मंजर देखे,
मेरी आँखों ने कई समंदर देखे.....
सैलाब रोके न रुका है कभी,
मैंने किनारों पर ढ़हते रेत के कई महल देखे.....
वक्त दौड़ रहा, भाग रहें हैं सभी,
न बंदिशें बची है, और न ही कोई चाहतें.....
हसरतों और ख्वाहिशों की इस होड़ में,
मैंने झीलों में डूबते कई कँवल देखे.....

संगीता सिंह 'भावना'

समय निरंतर गतिमान है और समय की गति के साथ सृष्टि के प्रत्येक प्राणी का गहन रिश्ता है। समय के इसी बदलाव के साथ व्यक्ति की सोच, उसकी आवश्यकताएं, अपेक्षाएं, तथा मान्यताएं बदलती हैं। प्रत्येक युग की अपनी भिन्न- भिन्न परिस्थितियां रही हैं जिनकी भिन्नता के कारण ही मानव जीवन में उतार - चढ़ाव आते रहते हैं। मानव जीवन भी एक सिक्के की तरह है, जिसके दो पहलू होते हैं। बुरे के साथ अच्छा आता है, और ये कुछ भविष्यवाणियां हैं जो मुझे लगता है कि बनी रहेंगी और आदर्श बन जाएंगी। इस नई उभरी महामारी ने मनुष्य की चेतना को एक अनोखी चुनौती के लिए जगा दिया है। पूरा विश्व अभी भी इस महामारी से लड़ रहा हैं। हम बचे हुए लोगों की दौड़ हैं, लड़ाई कठिन और लंबी है,किन्तु हमें यकीन है कि हम इससे उबरने जा रहे हैं।

कोरोनावायरस (CoVs), वायरस के बड़े परिवार का एक हिस्सा है, जिनमें आम सर्दी से लेकर गंभीर बीमारियों जैसे मनुष्यों में श्वसन संबंधी बीमारियों का कारण बनते हैं, जिसे ICTV (इंटरनेशनल कमेटी ऑन टैक्सोनॉमी ऑफ वाइरस) ने 11 फरवरी 2020 को नए वायरस के नाम के रूप में ''गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोनावायरस-2(SARS&CoV-2) की घोषणा की। यह नाम इसलिए चुना गया क्योंकि वायरस आनुवंशिक रूप से 2003 और 2012 के SARS प्रकोप के लिए जिम्मेदार कोरोनावायरस से संबंधित है। विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (OIE) और संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के साथ पहले विकसित दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, WHO ने 11 फरवरी 2020 को इस नई बीमारी के नाम के रूप में "COVID-9" की घोषणा की। WHO को पहली बार इस नए वायरस के बारे में 31 दिसंबर 2019 को चीन के जनवादी गणराज्य वुहान में 'वायरल निमोनिया' के मामलों के एक समूह की रिपोर्ट के बाद पता चला। 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोग, और उच्च रक्तचाप, हृदय और फेफड़ों की समस्याओं, मधुमेह, मोटापा या कैंसर जैसी अंतर्निहित चिकित्सा समस्याओं वाले लोगों में गंभीर बीमारी विकसित होने का खतरा अधिक होता है। हालांकि, कोई भी COVID-19 से संक्रमित हो सकता है और किसी भी उम्र में मृत्यु का शिकार हो सकता है। कोरोना वायरस का प्रकोप दुनिया भर में, आज, सितम्बर 2021 में लगभग 20 करोड़ से ज्यादा लोगों को संक्रमित कर चुका है, उनमें से 45 लाख से ज्यादा लोगों ने अपनी जान भी गवाईं हैं। साथ ही ज्यादातर संख्या में लोगों को वैक्सीन का वितरण भी हो गया है। वर्तमान में तो परिस्थिति काफी नियंत्रण में है किन्तु हमें अभी भी सजग एवं सावधान रहने की आवश्यकता है। इस महामारी ने किसी भी आयु वर्ग को अछूता नहीं छोड़ा, हालाँकि अन्य आयु समूहों के तुलना में, बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर इसका असर अधिक पड़ा है।

भारत में कोविड-19 महामारी के तेजी से बढ़ने से निपटने और सामुदायिक प्रसार को नियंत्रित करने के लिए, राष्ट्रीय स्तर पर अपनाये गए उपाय, जैसे- शारीरिक दूरियां, बाहर आने - जाने पर प्रतिबन्ध और घर में ही बंद रहना आदि ने लोगों के जीवन और आजीविका को बाधित कर दिया। इस सामाजिक अलगाव के चलते बुजुर्गों को भावात्मक रूप से वंचित करने के साथ ही उनके दैनिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। शशिभूषण द्विवेदी अपनी कहानी, 'एक बूढ़े की मौत' के माध्यम से वृद्ध व्यक्ति के इसी भाव, इसी अकुलाहट को अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं। कहानी के मुख्य पात्र, जानकी बाबू, अपने आप को जब भी अकेला महसूस करते तब वे अपने इस सूनेपन को मिटाने के लिए बाहर घूमने चले जाया करते। कहानीकार ने उनके माध्यम से उनके विचारों को सहज ढंग से बताने का प्रयास किया है- ''जानते हो जिंदगी में मृत्यु का आना कितना जरूरी है.... उस फूल को देखो और मेरी बातों को ध्यान से सुनो.....।'' दरअसल यह जानकी बाबू की मनःस्थिति है जो कि एकाकीपन की अकुलाहट को उभार रहा है। महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कहते हैं,

''मैं अकेला हूँ,

देखता हूँ आ रही मेरे दिवस की सांध्य -बेला''

वस्तुतः कोविड-19 का दुनिया पर नकारात्मक के साथ - साथ सकारात्मक प्रभाव भी लक्षित होते हैं। इसने प्रकृति और मानव जीवन को कई तरीकों से लाभान्वित किया है। कोविड -19 का पहला सकारात्मक पहलू पर्यावरण पर है। विश्व, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भों में पर्यावरण प्रदूषण में कमी आयी है, मुख्य रूप से वायु, ध्वनि और जल प्रदूषण में। चिकित्सा, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, रोबोट विज्ञान, धार्मिक और मानवतावादी विज्ञान जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों में नए वैचारिक निर्माण हुए है। इसने सोचने का एक नया रास्ता खोल दिया है परिणामतः हर देश में अनुसंधान और विकास गतिविधियों का विस्तार नजर आ रहा है।

कोविड-19 स्थिति ने परिवारों में भावनाओं और रिश्तों को बनाए रखने के तरीके को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। जैसे-जैसे जीवन धीमा होता गया, हमने लोगों से जुड़े रहने के तरीके खोजे, भले ही यह कुछ समय के लिए ही क्यों न हो। हर किसी को एक सामान्य जीवन शैली, साझा करने और एक-दूसरों की देखभाल करने की आदत सी हो गयी। पारिवारिक एवं सामाजिक मन-मुटाव मिटा, एक-दूसरे की परवाह पर ध्यान केंद्रित हुआ। अभी फिलहाल में मैं सफर कर

रही थी जब मेरी मुलाकात एक बूढ़े दंपत्ति से हुई। काफी देर तक गप-शप करने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि वे अपनी पूरी जिंदगी सेना में सक्रिय रहे। अब वे दोनों एक विशाल आवासीय परिसर में हैं, जहाँ कई सेवानिवृति सैन्य अधिकारी रहते हैं। महामारी के प्रकोप ने निवासियों में तत्काल दहशत पैदा कर दी। कोविड तालाबंदी के शुरुआती दिनों में घर के अंदर रहने के लिए मजबूर होने के बाद, निवासियों ने परिसर में ही चलने - फिरने की अनुमति ली। मि. सिंह ने कहा, ''महामारी ने हमारे पुराने जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया है, लेकिन हमने नए रास्ते अपनाये हैं। सुबह-शाम अपनी बालकनियों पर खुशी के घंटों की मेजबानी करके पड़ोसियों और दोस्तों के साथ बातचीत करते थे।'' मि. सिंह से यह बात सुन कर मुझे जीवन के प्रति सकारात्मकता और एक नए नजरिये का आभास हुआ। हजारों लोगों ने शायद इसी तरह से जीवन को रंगीन बनाने की कोशिश की। लेकिन सभी मि सिंह की तरह आसमान की उड़ान नहीं कर पाते। हमारे भारत में लगभग दो-तिहाई जनता गरीबी का जीवन व्यतीत करती है। रोज की रोटी के लिए सोचना पड़ता है।

भारत महामारी की पहली तथा दूसरी लहर के बीच बचे रहने की लाख कोशिश किया, फिर भी पूरा देश इसके चपेट में बहुत बुरी तरह से आ गया। हमारे गरीब और कमजोर जनता, विशेषतः बुजुर्गो को सबसे अधिक जोखिम का सामना करना पड़ा। आज हमारे समाज में वृद्ध लोगों को दोयम दर्जे के बरताव का सामना करना पड़ रहा है। देश में तेजी से सामाजिक परिवर्तनों का जो दौर चल रहा है, इस कारण वृद्धों की समस्याएं विकराल रूप धारण कर रही हैं।

वृद्धावस्था, वह अवस्था है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है। उन्हें विविध प्रकार के शारीरिक व मानसिक रोग लगने की अधिक संभावनाएं होती हैं। यह एक स्वाभाविक व प्राकृतिक घटना है, जो हर मानव में आना निश्चित सा है। किन्तु फिर भी एक अनिर्णय प्रश्न हमेशा बना रहता है कि, बुढ़ापा एक अभिशाप है या वरदान? मनुष्य वृद्धावस्था की कल्पना मात्र से ही डर जाता है, निराशा हो जाता है, सब कुछ से कटा महसूस करने लगता है। परन्तु सच तो यह है कि यह अवस्था जीवन का सार है। जन्म है तो जीवन की अनेक अवस्थाएं हैं - बाल्यावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था। शारीरिक असमर्थता, मानसिक समस्याएँ, परनिर्भरता, मूल्य परिवर्तन, आर्थिक संकोच, जीवनसाथी की मृत्यु, निराश्रित होने की आशंका, भविष्य की अनिश्चितता, संबंधों की निरर्थकता का बोध, अनुराग -विराग का द्वंद्व, पराएपन और अलगाव की स्थिति, बचपन और युवावस्था की यादों से जुड़ा अतीत प्रेम, काम और क्रोध जैसी वृत्तियों से जुड़ी समस्याएँ और आध्यात्मिक विभ्रम जैसे अनेक पक्ष वृद्धावस्था के विचारणीय बिंदु हैं।

सच्चाई यह है कि वृद्धावस्था जीवन की संध्या है, यानी डूबता हुआ सूरज, और यही जीवन का सबसे अनिवार्य क्रम है। क्योंकि धरती पर जिसने भी जन्म लिया है उसे एक न एक दिन वृद्ध होना ही है। यह ढ़लती उम्र हर मानव के लिए एक चिंता का विषय बन जाती है। इस सन्दर्भ को महाकवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता के माध्यम से बखूबी समझा जा सकता हैं,

"गूंज बची है गीत गए, अब वे वासर बीत गए
मन तो भरा - भरा है अब भी, पर तन के रस रीत गए
चमक छोड़ चैमासे बीते, कम्प छोड़कर शीत गए
देकर सुध की उमस, आगे बढ़ कितने मधु मीत गए
इसे राम जाने जीवन में हारे हम या जीत गए
इतना ही क्या थोड़ा जो यह गूंज बची है गीत गए''

महामारी के दौरान बुजुर्गों को न केवल अपनी जान का डर सता रहा था बल्कि संक्रमण से जुड़े कलंक भी थे। कोविड तालाबंदी ने उनके डर को और बढ़ा दिया, क्योंकि उन्हें शारीरिक एवं मानसिक तनाव, परिवार से अलगाव, बेगानेपन का भाव, अनिश्चितता, दो पीढ़ियों के बीच मानसिक टकराहट और आर्थिक असमर्थता का सामना करना पड़ा। जिसमें घबराहट, चिंता, नियंत्रण खोने या पागल होने का डर, मरने का डर, खुशी की कमी, ऊर्जा की हानि, बेचैनी, नींद और भूख कम होने के कई एपिसोड की शिकायतें शामिल हैं। एक तो वह उम्र बढ़ने से व्यक्तिगत परिवर्तन का शिकार हैं तो वहीं दूसरी तरफ वर्तमान औद्योगिक समाज का इनके प्रति अपनाये गए व्यवहार के तरीके हैं। वैश्वीकरण ने हमें इस कदर प्रभावित किया कि आधुनिकतावाद की चक्की में पिसकर आज आत्मीयता का नाम-ओ-निशान समाप्त होने लगा है।

ममता कालिया का 'दौड़' उपन्यास इसी बाजार और उपभोक्तावादी व्यवस्था के ताकत को अभिव्यक्त करता है, जहाँ पारस्परिक रिश्ते-नाते न केवल अनुदार, मतलबी और अर्थ-केंद्रित बन गए, बल्कि नष्ट भी होते जा रहे हैं - ''अपने बच्चे के बारे में कुछ भी कहना बुरा लगता है पर सिद्धू ने कहा मैं किसी को बेटा बना कर सारे काम करवा लूँ। ऐसा भी कभी होता है।'' यह उपन्यास उपभोक्ता, भूमंडलीकरण और उत्तर -आधुनिक बाजारवाद का दर्दनाक आख्यान है। स्वयं ममता

जी उपन्यास के आमुख में लिखती हैं, ''वर्तमान सदी में समस्त अन्य वाद के साथ एक नया वाद आरम्भ हो गया, बाजारवाद और उपभोक्तावाद। इसके अंतर्गत, बीसवीं सदी का सीधा सौदा खरीदार एक चतुर उपभोक्ता बन गया। जिन युवा-प्रतिभाओं ने यह कमान संभाली उन्होंने कार्य क्षेत्र में तो खूब कामयाबी पाई पर मानवीय संबंधों के समीकरण उनसे कहीं ज्यादा खिंच गये, तो कहीं ढ़ीले पड़ गए। 'दौड़' इन प्रभावों और तनावों की पहचान कराता है।'' सुशिक्षित और संस्कारी रेखा व राकेश अपने बेटों की 'दौड़' के चलते असहाय-बेसहारे की स्थिति में धकेले जाते हैं। बच्चों को पैसा कमाने, करियर बनाने, आधुनिक होने का भूत सवार है। उसके लिए वे अपने माँ-बाप को वनवास तो दे ही देते हैं, साथ ही उनकी परवरिश का भी मोल लगा देते हैं, ''जाने के दिन उसने माँ के नाम बीस हजार का चैक काटा, 'माँ हमारे आने से आपका बहुत खर्च हुआ है, यह मैं आपको पहली किश्त दे रहा हैं। वेतन मिलने पर और दूंगा।'' उम्र का यह पड़ाव अपनी अगली पीढ़ी से अपेक्षाएँ कर बैठता है, परन्तु जब उनकी अपेक्षाओं की कसौटी पर नई पीढ़ी नहीं उतर पाती है तभी यह मानसिक टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है।

सच तो यह कि अपने बच्चों को कभी भी अकेला न छोड़ने वाले माता-पिता के जीवन में आज प्रमुख समस्या है तो वह है अकेलेपन (एकाकीपन) की। अपने ही बच्चों के द्वारा जब वृद्ध माता-पिता के साथ रूखा व्यवहार किया जाता है, तो उनका एकाकीपन निरन्तर बढ़ता जाता है। इसी एकाकीपन के कारण बुजुर्ग अन्य कई मानसिक व्याधियों से घिर जाते हैं और तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

NGO 'ऐज वेल फाउंडेशन' ने पूरे भारत से लगभग 10000 वरिष्ठ नागरिकों के साथ बातचीत की। इस सर्वेक्षण और अध्ययन से यह पता चला है कि महामारी ने न केवल बुजुर्ग आबादी के स्वास्थ्य कि स्थिति को प्रभावित किया है बल्कि उनके सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और वित्तीय कल्याण को भी प्रभावित किया है। चूकि अधिकांश वृद्ध, आंशिक या पूर्ण रूप से अपने आर्थिक दशा के लिए दूसरों पर निर्भर होते हैं, वर्तमान में सर्वव्यापी महामारी के कारण उनकी स्थिति और नाजुक हो गयी है। राष्ट्रिय - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था भी सिकुड़ गयी है, नतीजा यह हुआ कि लोगों ने अपनी नौकरी और व्यवसाय खोया है। भारत के लगभग आधा अरब लोग अनौपचारिक क्षेत्र में काम करते हैं, दैनिक मजदूरी पर जीवन यापन कर रहे हैं। लॉकडाउन ने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया, उन्हें भूखा और दयनीय स्थिति में छोड़ दिया। पैसे और कमाई के साधन नहीं होने के कारण, ये लोग भोजन और अन्य मदद के लिए दूसरों पर निर्भर हैं।

कई वंचित बुजुर्ग अपनी आजीविका के नुकसान के कारण भूख से मृत्यु के शिकार हो गए, भोजन और बुनियादी आवश्यक चीजों की मांग तेजी से बढ़ी है। बुजुर्ग और उनके परिवार हाशिये पर हैं, सबसे बुरी तरह से प्रभावित हैं और बस जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे समय में अनेकों सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाएं विभिन्न प्रकारों से जनता तक पहुँचने एवं मदद करने के लिए कदम बढ़ाएं हैं, जिनमें से दिल्ली की ''चेतनालय" नामक एक सामाजिक क्रिया शाखा है। इस संस्था तथा उनके कार्यों के बारे में जानकारी ग्रहण करने की मेरी उत्सुकता बढ़ी, जिससे ज्ञात हुआ कि यह दिल्ली कैथोलिक चर्च के द्वारा कार्यान्वित है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य - समाज के वंचित, हाशिये पर और कमजोर वर्गों को आत्मनिर्भर और मानवीय गरिमा के लिए सशक्त बनाना तथा एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ न्याय और समानता बनी रहे। वर्तमान में 2017 से, फा जॉन ब्रिटो जेवियर के नेतृत्व में, यह संस्था दिल्ली में लगभग 1 लाख लोगों एवं हरियाणा के 100 परिवारों की मदद कर रहें हैं, जिसमें 500 बुजुर्गों की देखभाल के लिए अलग ही परियोजना बनायी गयी है। मेरे आकर्षण का एक और कारण इस संस्था द्वारा ''कोरोना की लहर" को दिया गया नाम -''करुणा की लहर" है।

''प्लीज बचा लो, कोई तो मदद करो हमारी" बूढ़ी काकी बिलख रही थी। अस्पताल में इमरजेंसी के सामने स्ट्रेचर पर अपने सांसों की भीख मांगते काकी के पतिदेव थे। पागलों सी इधर -उधर भागती - फिरती काकी बस इसी कोशिश में थी कि कहीं से एक ऑक्सीजन सिलेंडर मिल जाये और वो अपने पति को बचा पाए। दोनों लगभग 70 वर्ष के आस - पास थे। अपने पति की दशा देख धीरे - धीरे बूढ़ी काकी भी टूटने लगी। आस - पास जब कोई चारा नजर नहीं आया, तो बूढ़ी काकी अपनी सांसे अपने पति को देने लगी। काका तो बचे नहीं। अंततः अपने पति को बचाते हुए पत्नी ने भी दम तोड़ दिया। विशेषतः महामारी के दौरान आर्थिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सहारा बनकर, ऐसे ही बिलखते, बेसहारे लोगों की आस बन कर 'चेतनालय' ने अपने होने का एहसास कराया है। जब पूरा विश्व नकारात्मकता एवं शारीरिक और मानसिक तनाव से जूझ रहा है, तब सकारात्मक एवं प्रेम का एक शब्द भी प्रभावित कर जाता है।

कोविड - 19 महामारी के कारण सामाजिक अलगाव, अकेलापन और दिनचर्या में बदलाव बुजुर्गों पर शारीरिक प्रभाव के अलावा मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव पड़ा है, जिसका अनुमान लगा पाना भी मुश्किल है। हालाँकि, एक अध्ययन ने बुजुर्गों में स्वास्थ्य परिणामों पर दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव की सूचना दी है। बुजुर्ग आबादी को परिवार, समुदाय, समाज और शारीरिक सहायता की आवश्यकता है। सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर, 'चेतनालय' ने

''करुणा की लहर" में दिल्ली एवं उसके आसपास के क्षेत्रों के वंचित गरीब बुजुर्गों और उनके परिवारों, निराश्रित और बेघर व्यक्तियों एवं परिवारों को अपने विभिन्न कार्यक्रम हस्तक्षेपों के माध्यम से आपातकालीन सहायता, राहत और राशन प्रदान किया।

यह अब (22जून 2021) तक कोविड-19 की पहली एवं दूसरी लहर को मिला, 74565 निःशुल्क पका भोजन किट, लगभह 10245 से ज्यादा सूखा राशन, 6967 स्वच्छता किट (हैंडवाश, सैनिटाइजर, मास्क आदि) तथा 4000 शिक्षा किट का वितरण कर चुके हैं, साथ ही साथ जिन्होंने मुख्य कमाई करने वाले सदस्य को खो दिया है, उनमें से 50 परिवारों को नगद 10000 प्रत्येक, की वित्तीय सहायता भी प्रदान किया गया है। साथ ही साथ, परिवारों के पुनर्वास के लिए 20 लाख जुटाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वे छोटे-मोटे व्यवसाय शुरू कर अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। अपने इसी करुण कार्यों के कारण आज 'चेतनालय' राज्य और केंद्र सरकारों एवं कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का एक विश्वसनीय भागीदार भी बन गया है।

सर्वेक्षण के दौरान, 'चेतनालय' द्वारा मदद ग्रहण कर रहे वृद्धों में से, मेरी बातचीत 20 वृद्धों से हुई, जिनमें से 8 वृद्ध अपने परिवार तथा 12 अकेले रहते हैं। अकेले रहने वाले बुजुर्ग अकेलेपन और अवसाद से ही नहीं बल्कि भोजन, उपयोगिता और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं से भी जूझते हैं। उनसे बात करते वक्त ममता कालिया का 'दौड़' उपन्यास याद आ गया, जहाँ आधुनिक समाज में चलते बाजारवाद और उपभोक्तावाद में जिंदगियाँ सिमट गयी हैं, रिश्ते टूट रहे हैं, और अपनत्व बिखर रहा है। घर के बड़े -बुजुर्ग तो पुराने नाकाम वस्तु के सामान घर के बाहर फेंक दिए जाते हैं। ''हम अब किसी काम के नहीं, इसीलिए अपनी शादी के कुछ साल बाद मेरा बेटा मुझे घर से बाहर 'फेंक' दिया, मुझे अकेले रहते 7 साल हो गए। तब से आज तक 'चेतनालय' से हमें भोजन मिलता है'', भरे मन से, 70 वर्षीय कमला देवी ने अपनी व्यथा कथा सुनाई थी।

हमारे आधुनिक समाज में, वृद्धों के इसी अकेलेपन, बेगानेपन तथा उनके विभिन्न समस्यायों पर हिंदी साहित्यकारों ने अपनी कलम चलायी है। जिसमें काशीनाथ सिंह का 'रेहन पर रग्घू', चित्रा मुद्गल का 'गिलिगडू', निर्मल वर्मा का 'अंतिम अरण्य' हृदयेश का 'चार दरवेश' कृष्णा सोबती का 'समय-सरगम', ममता कालिया का 'दौड़', रवीन्द्र वर्मा का 'पत्थर ऊपर पानी' आदि उपन्यास एवं अनेकों कहानियाँ प्रमुख किरदार निभाते हैं। हृदयेश की 'चार दरवेश' में सूखे नाले की पुलिया पर बैठ कर अपने सुख-दुख बांटते हुए चारों वृद्ध अपने सुख-दुख सांझे करते हैं। घरों से उखड़े लोग अपने लिए उपयुक्त जगह घर, मुहल्ले और शहर से दूर दिन बिताते हुए नजर आते हैं। रवीन्द्र वर्मा ने 'पत्थर ऊपर पानी' में संबंधों की छलछलाती तरलता को वाणी दिया है, जो पत्थर से भी ज्यादा कठोर और संवेदन शून्य होती जा रही हैं। दरअसल वह पानी सूख गया है जो रिश्तों की जड़ों को सींचता था और आत्मीयता की शाखें हरी-भरी रखता था। कहानी में दो बेटों का जिक्र है जो बारी- बारी से छह -छह महीने अपनी माँ को रखते हैं। पर जब दूसरे बेटे की बारी आयी तो वह अपनी माँ को पेट्रोल पम्प पर, कुछ काम बता कर, हमेशा के लिए छोड़ चला जाता है।

"उन्होंने आँचल से अपने आँसू पोंछे। फिर कहा, "मैं इंतजार कर रही हूँ।"

"कौन आ रहा है?"

"मेरा बेटा। वही मुझे यहाँ छोड़ गया है।"

''कहाँ गया?''

"उसने कहा, तुम यहीं रुको, मैं पांच मिनट में एक काम करके आया।"

"कितनी देर हो गई?"

"तब धूप फैली थी।"

प्रोफेसर चुप हो गये। मगर चुप्पी आँसुओं का हल नहीं थी।

"आप कहाँ से आ रही हैं?" उन्होंने पूछा,"कहाँ जा रही हैं?"

फिर अचानक उनकी आँखों में आँसू छलक आये। वे भर्राये गले से बोलीं, "एक बेटे के घर से आ रही हूँ। दूसरे बेटे के घर जा रही हूँ।"

इसी तरह 'समय-सरगम', 'रेहन पर रग्घू' तथा 'दौड़' में भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप संवेदना, सम्बन्ध और सामूहिकता की दुनिया में उठते तूफान का प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। आज, महामारी के साथ सामाजिक और मानवीय मूल्यों का क्षरण और भी ज्यादा चिंता का विषय बन गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बुजुर्ग तो पहले से ही हाशिये पर रहे हैं, अनेकों शारीरिक,मानसिक, सामाजिक और आर्थिक तनाव से पीड़ित हैं किन्तु इस सर्वव्यापी महामारी कोविड-19 ने उन्हें और भयभीत कर दिया हैं। जीवन के अंतिम पड़ाव में इस प्रकार के तनाव पूर्ण घटनाएं उनके अस्तित्व को झकझोर देती हैं। उनकी पीड़ा दोगुनी हो गयी हैं। 78 वर्षीय लीलावती जी, अपने बेटे द्वारा दिए गए घर में नितांत अकेली रहती हैं। दस साल पहले उनके पति का देहांत हो गया था। उनका मानना हैं कि, ''अकेलापन तो पहले से था, किन्तु अपने दोस्तों और पड़ोसियों से मेलमिलाप हो जाता था, महीने में एक बार बेटा भी देखने आ जाया करता था। जब से ये बीमारी आयी हैं, वो भी बंद हो गया। इस घर की दीवारें भी अब तो शांत हो गयी हैं।'' वर्तमान महामारी में हुए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिवर्तनों के कारण वृद्ध परिजनों के दिनचर्या पर बहुत प्रभाव पड़ा है। एक नए जोखिम भरी जीवन शैली में खुद को फिर से उन्मुख करना पड़ा है, जो उनके लिए अत्यंत दुखदायी है।

संदर्भः

1. डॉ शिवकुमार राजौरिया - वृद्धावस्था विमर्श और हिंदी कहानी , अद्वैत प्रकाशन - प्रथम संस्करण 2017
2. ममता कालिया- दौड़, वाणी प्रकाशन, दिल्ली- आवृत्ति संस्करण 2014
3. रवीन्द्र वर्मा- पत्थर ऊपर पानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- प्रथम संस्करण 2000
4. शशिभूषण द्विवेदी -एक बूढ़े की मौत, Retrieved from https://www.hindisamay.com/contentDetail.aspx?id=3076&pageno=1
5. चेतनालय समाज सेवा समिति, दिल्ली कैथोलिक चर्च, Retrieved from http://www.chetanalaya.org/History.aspx#
6. Coronavirus Disease Pandemic - World Health Organization. Retrieved from https://www.who.int/health-topics/coronavirus/origins-of-the-virus
7. Multidimensional impact of Covid-19 pandemic in India – Challenges and future direction (Review Article), Journal of Family Medicine and Primary Care. Retrieved from https://www.jfmpc.com/article.asp?issn=2249 4863; year= 2020; volume=9; issue=12; spage=5892; epage=5895; aulast=Kumar
8. Impact of Covid-19 on the elderly, Journal Patna Academy of Health Science, ResearchGate, Sep 2020. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/344249254_Impact_of_COVID-19_on_the_elderly
9. Second Covid-19 Wave Has Impacted Mental Health of Majority of Elderly, The Wire, 16 May 2021. Retrieved from https://thewire.in/health/covid-19-mental-health-elderly-people